ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड VIII अंक-IX

दिसम्बर—2016

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- निजी कृषि-परामर्श सेवाओं पर कार्यशाला
- इस माह के कृषि उद्यमी: श्री. गुरुदास, मुस्मड़े, राहुरी, महाराष्ट्र
- इस माह का संस्थान: उत्तर -पूर्वी हिल विश्वविद्यालय, तूरा, मेघालय
- हैदराबाद में राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय सर्वश्रेष्ठ अवार्ड एवं प्रदर्शनी
- सामाजिक उद्यमिता - जीवन बदल रहा है

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 –425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

निजी कृषि-परामर्श सेवाओं पर कार्यशाला

मैनेज ने विस्तारण विशेषज्ञों और कृषकों के बीच चौड़ी खाई को भरने के लिए मैनेज, हैदराबाद में 23 दिसम्बर, 2016 को "मैनेज प्रमाणित कृषि परामर्श एवं कृषिउद्यमिता विकास" पर एक दिवसीय परामर्शक कार्यशाला आयोजित की। श्रीमती वी. उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज ने अपने स्वागत भाषण में कार्यशाल के उद्देश्यों को संक्षेप में समझाया। महानिदेशक ने सरकारी प्रणाली में मुद्दों जैसे लाइन विभाग कर्मचारियों की कमी, लाइन विभाग अधिकारियों के पास अधिक कार्य, कृषि संबन्धित युवाओं के लिए रोजगार की कमी, कृषि-परामर्श सेवाओं में असफल कृषि विभाग, आदि पर ज़ोर दिया और इस बात पर बल दिया कि कृषि स्टेकहोल्डरों के अध्ययन और विचारानुसार अकेला लाइन विभाग कृषकों कि जानकारी और ज्ञान की वास्तविक मांग को पूरा नहीं कर सकता। अतः, विस्तारण गतिविधियों को बढ़ाने के लिए, मैनेज निजी विस्तारण सेवाओं पर अध्ययन करने का विचार कर रहा है। इस कार्यशाला ने कुल 18 कृषि उद्यमियों को एक साथ लाया जो क्षेत्रों जैसे जैव-उर्वरकों, जैव-कीटनाशकों का निर्माण, बीज उत्पादन, एकीकृत कीट प्रबंधन, जैविक कृषि, डेयरी कृषि, सूक्षम-सिंचाई, आईसीटी के नेतृत्व में एक्का-परामर्श, पंडाल खेती, संरक्षित खेती, आदि का कार्य कर रहे थे।

एक दिवशीय कार्यशाला "सर्टिफाइड एग्रीकल्चरल कंसल्टेंसी एंड अग्रि-प्रेणेउर्शिप डेवेलपमनट" का आयोजन मैनेज में सम्पन हुआ

.....पृष्ठ 4 में जारी

प्याज़ से खुशी के आँसू

प्याज़ भारत में उत्पादित लोकप्रिय फसलों में से एक है। महाराष्ट्र राज्य देश में प्याज़ का सबसे बड़ा उत्पादक है। विभिन्न पाक व्यंजनों में मुख्य सामग्री के रूप में प्रयोग किए जाने तथा कच्चा ही सलाद में प्रयोग किए जाने के कारण वर्ष भर इसकी मांग कम या ज्यादा एक समान ही रहती है। इसके अलावा, निर्यात वस्तु के रूप में, प्याज़ राष्ट्र की विदेशी मुद्रा में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। हालांकि, उत्पादकता के मामले में दूसरे देशों की तुलना में यह थोड़ा कम है। देवरली ग्राम, राहुरी तालुका, अहमद नगर जिला, महाराष्ट्र के पौध रोगविज्ञानी श्री. गुरुदास अशोक मुस्मड़े(39) के विचार में भारत में प्याज़ की कम उत्पादकता का कारण काफी हद तक गुणवत्ता के बीजों की सीमित उपलब्धता और संकर प्रजातियों की कमी को ठहराया जा सकता है। श्री. गुरुदास के पास 20 एकड़ सिंचित भूमि है। यह 2014-15 का समय था जब उन्हें गाँव में प्याज़ के गुणवत्ता के बीजों की अधिक मांग का पता चला। इस संदर्भ में उन्होंने केवीके बाभलेश्वर से संपर्क किया जैसाकी वें प्याज़ के बीज का उत्पादन शुरू करना चाहते थे। ऐसे ही एक दौरे के दौरान, उन्हें पता चला की केवीके-बाभलेश्वर एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नस केंद्र योजना के तहत कृषि-उद्यमिता प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। कृषि पौध रोगविज्ञान में निष्णात होने के कारण उन्होंने साक्षात्कार में भाग लिया और चयनित हुये।

श्री. गुरुदास मुस्मड़े, कृषिउद्यमी

प्रशिक्षण के दौरान, श्री. गुरुदास ने प्याज़ उत्पादन की तकनीकी जानकारियाँ सीखी। प्रशिक्षण पूरी तरह से समाप्त करने के पश्चात, उन्होंने जीएम सीड्स नाम से फ़र्म पंजीकृत किया और प्याज़ का उत्पादन आरंभ किया। केवीके बाभलेश्वर ने उन्हें लघु समय की किस्म के उत्पादन का सुझाव दिया। प्याज़ के बीजों का क्षेत्र दूषित क्षेत्र से अलग होना चाहिए । बहुमूल्य सुझाव प्राप्त करने के पश्चात श्री. गुरदास ने 10 एकड़ की ज़मीन में ब्रीडर बीजों का उत्पादन आरंभ किया। श्री. गुरुदास ने प्याज़ के बीज के उत्पादन की शल्क कंद से बीज की विधि का प्रयोग किया। इस विधि में, जब 75% पौधे ऊपर से मूड जाते हैं/ऊपरी हिस्सा मर जाता है तब शल्क कंद निकाल लिया जाता है। शल्क कंद को सुखाया जाता है या स्वाभाविक रूप से हवादार जगह में उपचरित किया जाता है तथा शल्क कंद से 2 से 3 सेंटीमेटर के ऊपर से उसे तोड़ दिया जाता है। इस स्तर पर रंग, आकृति और आकार के आधार पर शल्क कंद को निकाल दिया जाता । 50-80 ग्रा के मध्यम आकृति के शल्क कंद को चुना कर इकट्ठा किया जाता है। अगले मौसम में फिर से उगाने से पहले उनकी जांच की जाती है। संभावित उपज 400-450 किग्रा/एकड़ तक जाती है। अंकुरण और क्षेत्रीय परीक्षण के पश्चात, बीजों को का वाणिज्यिक उत्पादन में प्रयोग किया जाता है। जीएम सीड्स ने खरीफ मौसम के लिए लाल रंग की किस्म यानि फुले समर्थ, बसंत-780, भीमा सुपर और राबि और ग्रीष्म ऋतु के लिए पुना फुरसुंगी और एन24-1 विकसित किया है। श्री. गुरुदास तीन वर्ष से प्याज़ के बीज के उत्पादन कर रहे हैं और महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के राज्यों से लगभग 750 कृषक उनके अधीन ठेके पर है। श्री. गुरुदास इन कृषकों को रु.800 प्रति किलो की दर से बीज बेचते हैं। प्रति किलो बीज के उत्पादन की लागत रु.125 से 150 है और जीएम सीड्स का वार्षिक कारोबार रु.1 से रु.1.50 करोड़ है। श्री. गुरुदास ने 7 कर्मचारियों को पे रोल पर रखा है। अब वें मिर्च के बीज का उत्पादन कर रहे है और फुले ज्योति नामक एक नई किस्म विकसित की है। ग्वारफली में उन्होंने कोंकण भूषण नमक किस्म विकसित की है। आगे, श्री गुरुदास का कहना है कि, बीज उत्पादन के लिए शल्क कंद के चयन में अत्यंत सावधानी के कारण गुणवत्ता के बीज का उत्पादन संभव है। आज, वे प्याज़ के बीज के उत्पादन तथा प्याज़ की विभिन्न क़िस्मों के गुणवत्ता के बीजों के उत्पादक और आपूर्तिकर्ता के रूप में केवीके-बाभलेश्वर के स्रोत व्यक्तियों में से एक है। अब वें रंगीन क़िस्मों के प्रजनन पर ध्यान केन्द्रित कर रहें हैं। वें गर्व से कहते है कि, “क्लासिक पीले प्याज के बाद, अब हमने हमारी सीमा लाल, गुलाबी, और यहाँ तक की सफ़ेद प्याज़ तक बढ़ा दी है। फुले समर्थ उनके द्वारा विकसित किस्म है, जिसका रंग सुंदर गुलाबी है, उत्पादकों के लिए उच्च विश्वसनीयता और लचिलापन और उपभोगताओं के लिए उसके पत्तियों का स्वादिष्ट स्वाद।

श्री. गुरुदास अशोक मुस्मड़े, जीएम सीड्स
देओलली प्रवरा पोस्ट, राहुरी तहसील, अहमदनगर, महाराष्ट्र, पिन: 413716,मोबाइल: +919420953569, ईमेल: musmadegurdas@gmail.com

श्री. ससीकुमार. आर.

नोडल अधिकारी

एनटीआई का नाम: उत्तर-पूर्वी हिल विश्वविद्यालय, तुरा, मेघालय

पता: तुरा कैम्पस, चांदमारी, तुरा, मेघालय-794002

फोन 09863068311, ईमेल:nehutura@rediffmail.com,

फोन: 03651-223107 (O) , फ़ैक्स- 03651 -223953

मोबाइलनं: 08610561391

ईमेल:sashibiofoodster@gmail.com

प्रशिक्षण की सं.: 1

प्रशिक्षण में अभ्यर्थियों की संख्या: 29

उठों और निर्माण करो : एनईएचयू का लक्ष्य

उत्तर-पूर्वी हिल विश्वविद्यालय संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया और 19 जुलाई 1973 को अधिसूचित हुआ। अधिनियम में लिखित अनुसार विश्वविद्यालय के लक्ष्य हैं, "शिक्षा की ऐसी शाखाएँ जो उपयुक्त समझी जाए उसमे शिक्षण और अनुसंधान सुविधाएं प्रदान कर अग्रिम ज्ञान का प्रसार करना; उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों के पहाड़ी इलाकों के रहवासियों की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था में सुधार और समाज के कल्याण और मुख्यतः बौद्धिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक उन्नति पर विशेष ध्यान देना। एग्री-क्लीनिक एवं एग्री-बिज़नस केंद्र योजना के कार्यान्वयन के लिए 2016 में एनईएचयू-तुरा कैम्पस ने मैनेज-हैदराबाद के साथ सहकारिता स्थापित की। 16 दिसम्बर, 2016 को एनईएचयू-तुरा कैम्पस, मेघालय में पहला प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे 29 अभ्यर्थियों ने भाग लिया। सभी अभ्यर्थियों ने एग्री-बिज़नस में दिलचस्पी दिखाई। श्री. ए.के. टिगिडी, सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी (ए.पी.) और विशिष्ट अतिथि, श्री. एस.के. संग्मा, संयुक्त निदेशक, कृषि, मेघालय सरकार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और अध्यक्ष, प्रो. जी. सिंगइया, समर्थक कुलपति, एनईएचयू-तुरा कैम्पस, मेघालय ने सत्र की अध्यक्षता की। श्री. ए.के.टिगिडी ने "कृषिउद्यमी और उनका महत्व" पर विशेष भाषण दिया, श्री. एस.के. संग्मा ने "मेघालय में व्यवसाय मॉडल के रूप में वाणिज्यिक बागबानी" पर अवलोकन दिया और प्रो. जी. सिंगइय्या ने "मेघालय में विपणन प्रणाली का महत्व" साझा किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम ज़ोर-शोर से चल रहा है और मैनेज-हैदराबाद अपनी शुभकामनाएँ देता है।

एनईएचयू, तुरा, मेघालय में एसी एवं एबीसी प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन

एनईएचयू-तुरा, मेघालय में प्रशिक्षार्थी

पृष्ठ सं. 1 से जारी.....

इस मॉडल में एक कॉल सेंटर है जिसका एक टोल फ्री नंबर है जहां कृषक जानकारी अथवा सुझाव और अपने समस्याओं का समाधान प्राप्त करने हेतु संपर्क करते हैं। उसके पश्चात, टेली-सलाहकार कृषक की जानकारी (नाम, पता, फोन नंबर, आदि) इकट्ठा करता है और संबन्धित परिचालन क्षेत्र में निजी कृषि परामर्शदाता से संपर्क करता है। निजी कृषि परामर्शदाता जरूरतमन्द कृषक से संपर्क करता है जिसे कृषि सेवा की आवश्यकता होती है। कृषकों को सेवा के लिए निजी सलाहकार को निर्धारित शुल्क का भुगतान करना पड़ता है। मार्गदर्शक के रूप में, इस मॉडल का कार्यान्वयन तेलंगाना और आंध्रप्रदेश के राज्यों में किया जाएगा। डॉ. के. विजय लक्ष्मी, निदेशक (वनस्पति स्वास्थ्य प्रबंधन), राष्ट्रीय वनस्पति स्वस्थ्य प्रबंधन संस्थान (रा व स्वा प्र सं), ने संक्षेप में समझाया और उन घटकों के बारे में चर्चा की जिन्हें इस मॉडल में एकीकृत किया जा सकता है जैसे प्लेहाउस, बीज उपचार, जैविक कृषि, जैव कीटनाशक, जैव नियंत्रक एजेंट, मधुमक्षिशाला आदि। रा व स्वा प्र सं ने वनस्पति स्वास्थ्य प्रबंधन के पहलुओं में दिलचस्पी रखने वाले निजी कृषि सलाहकारों को पुनश्चर्या प्रशिक्षण प्रदान करने की स्वीकृति दी है। इस कार्यशाला का निष्कर्ष शिक्षाप्रद था और सभी प्रतिभागियों ने मिलकर मैनेज के सहकार्य से इस मॉडल पर कार्य करने के लिए सहमति व्यक्त की। अधिक विवरण हेतु कृपया helplinecad@gov.in पर मेल करें अथवा टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर 1800 456 1556 पर संपर्क करें।

एक दिवशीय 'कृषि व्यापर परामर्श' विषय पर कार्यशाला का आयोजन मैनेज में सम्पन हुआ

घोषणा

हैदराबाद में राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय सर्वश्रेष्ठ कृषिउद्यमी अवार्ड एवं प्रदर्शनी

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज), एग्री-क्लीनिक्स एवं एग्री बिज़नस केंद्र योजना (एसी एवं एबीसी) के तहत प्रशिक्षित कृषिउद्यमियों हेतु 7 - 9 मार्च 2017 को हैदराबाद, तेलंगाना में तीन-दिवसीय राष्ट्रीय स्तरीय प्रदर्शनी आयोजित कर रहा है। कृषिउद्यमियों के लिए विशेष रूप से आयोजित इस अनूठी प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए सभी सफल कृषिउद्यमियों को आमंत्रित किया जाता है। माननीय राज्य कृषि मंत्री श्री. राधा मोहन सिंह जी इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करेंगे और सफल कृषिउद्यमियों को पुरस्कार वितरण करेंगे। पहले आओ पहले पाओ के आधार पर 300 कृषिउद्यमियों को समाहित करने के लिए लगभग 300 स्टॉल खड़े किए जाएंगे। अधिक सूचना हेतु कृपया www.manage.gov.in/ www.agriclinics.net देखें अथवा श्री. विनय कुमार पी., सलाहकार, मैनेज, हैदराबाद, से मोबाइल नं..: 9538243377 ईमेल: vinay.cad@manage.gov.in पर संपर्क करें।

जीवन बदल रहा है

श्रीमती एम. सरिता रेड्डी, एक महिला कृषिउद्यमी और नवरत्न क्रॉप साइंसेस (पी) लिमिटेड की मालकिन ने तेलंगाना राज्य के हैदराबाद के केन्द्रीय कारागार चेरलापल्ली के क़ैदियों को उन्नत जैविक खेती तकनीक में प्रशिक्षित करने की पहल की है। श्री. के. वेंकटेश्वर रेड्डी, जेल अधीक्षक ने नवरत्न क्रॉप साइंसेस प्राइवेट लिमिटेड को क़ैदियों को जैविक कृषि में प्रशिक्षण देने हेतु आमंत्रित किया। इस प्रशिक्षण के पीछे का उद्देश्य था क़ैदियों को कृषि में प्रशिक्षित करना ताकि जब वें अपनी सज़ा पूरी करे तो समाज में मुश्किल वापसी के लिए बेहतर रूप से तैयार रहें और स्व-रोजगार प्राप्त कर सके। प्रशिक्षण में, कुल 80 कैदी चुने गए थे जिसमे से 75 प्रतिशत ग्रामीण पुष्ठभूमि से थे और रिहा होने के पश्चात खेती करना चाहते थे। रसोई अपशिष्ट प्रबंधन, खाद बनाना, केंचुआ खाद बनाना, प्राकृतिक जैविक-कीटनाशक तैयार करना, बाज़ार के अवसर और रुझान, प्रमुख फसलों पर पद्धतियों का पैकेज, सब्सिडी, सूक्ष्म-सिंचाई पर सरकारी योजना, बागबानी फसलें, संरक्षित कृषि, आदि विषयों को लेकर प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तैयार किया गया। दो माह के प्रशिक्षण में, अस्सी क़ैदियों को केंचुआ खाद, खाद, प्राकृतिक कीटनाशक, प्राकृतिक प्रोटीन बनाने (पंचगव्य), प्राकृतिक विषैला चारा बनाने और बाज़ार रणनीतियों आदि में प्रशिक्षित किया गया। श्री. के. वेंकटेश्वर रेड्डी, जेल अधीक्षक का कहना है कि, "मुख्य परिवर्तन यह था कि, क़ैदियों को फसलों के मुख्य कीट, जन्तु, रोगों की पहचान और उनके नियंत्रण उपायों आदि में भी प्रशिक्षित किया गया था। आगे वे कहते है कि, "यह कैदी वें लोग है जिन्होंने मुश्किल दौर का सामना किया है किन्तु थोड़ी सी मदद से वें सही रास्ते पर आ सकते है और अपनी आजीविका कमा सकते है। प्रशिक्षण ने कैदयों में आत्मविश्वास जगाया और उनके व्यवहार में बदलाव लाया। एक कैदी ने कहा, "आरंभ में, मैं लोगों से बात करने से भागता था, लेकिन अब मुझमें आत्मविश्वास आ गया है, मैंने सम्मान देना, आत्मविश्वास के साथ कार्य करना और सोचना सीख लिया है और विश्वास दिलाना भी सीख लिया है। मैं वापस जाकर कृषि आरंभ करूंगा"।

सम्पर्क : नवरत्न क्रॉप साइंसेस से http://www.navaratnacropscience.com/ मोबाइल: +91 90101 11139. ईमेल आईडी :navaratnacropscience@gmail.com पर संपर्क किया जा सकता है।

श्रीमती सरिता रेड्डी ने प्रशिक्षण का उद्घाटन

चेरलापल्ली केंद्रीय कारागार में क़ैदियों द्वारा निर्मित केंचुआ-खाद एकक

प्रशिक्षण के दौरान क़ैदी

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

AGRICLINICS & AGRIBUSINESS CENTRES
BETTER FARMING BY EVERY FARMER

कृषि उद्यमी उद्यमवृत्ति विकास केंद्र (सीएडी),
राष्ट्रीय कृषि विस्तारण प्रबंध संस्थान (मैनेज,)राजेन्द्रनगर, हैदराबाद-500 030, भारत
ई-मेल: indianagripreneur@manage.gov.in

"कृषि उद्यमी " श्रीमती वी.उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज द्वारा प्रकाशित है।
मुख्य संपादक : श्रीमती वी. उषा रानी, आईएएस, महानिदेशक, मैनेज
संपादक : डॉ सरवनन राज निदेर्शक (कृषि विस्तार /(सी.ए.डी.)
सहायक संपादक : डॉ. लक्ष्मी मूर्ति, श्रीमती. ज्योति सहारे
हिन्दी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली